३. गायन

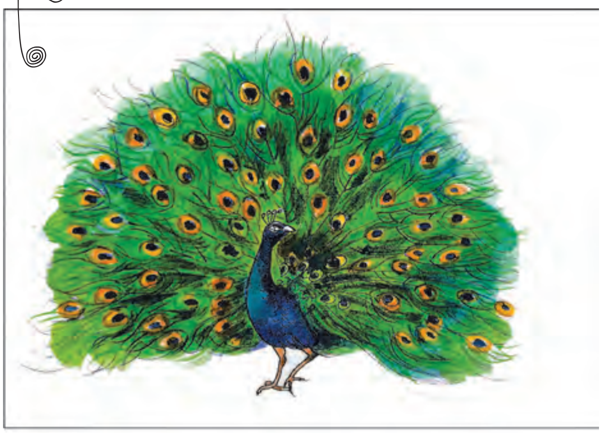

बड़बड़ गीत

चिउँ चिउँ गौरैया आए
कुहु कुहु कोयल भी गाए
मिठू-मिठू कर तोता आया
काँव-काँव कौआ चिल्लाया
गाएँ डोलें सारे मिलकर
आनंदित हो नाचें जमकर
साँय-साँय कर हवा आ गई
बादल से जलधार बहा गई
सबने मिल आनंद मनाया
मोर ने थुई-थुई नाच दिखाया ।

समूह गीत

म्याऊँ म्याऊँ चिल्लाए कौन
मनी के बिलौट और कौन
भौं-भौं शोर मचाए कौन
मोती कुत्ता और कौन
हूप-हूप अलापे कौन
पेड़ के बंदर और कौन
टर टर टर टर्राए कौन
मेंढ़क भैया और कौन
हंबा-हंबा रंभाए कौन
कपिला गाय और कौन ।

- उपरोक्त बड़बड़ गीत सुर ताल में गवा लें । इस प्रकार के अन्य गीत गवाएँ ।
- गीतों का संग्रह करवाएँ ।

लोकगीत

चक्की की घर्र–घर्र आवाज से मेरी नींद खुल गई । बाहर आकर देखा तो बरामदे में बैठी दादी अनाज पीस रही थी । वह अनाज पीसते–पीसते 'गाना' भी गा रही थी । कितनी मधुर आवाज है दादी की ! मैंने खिड़की से देखा तो अभी सूर्योदय हुआ नहीं था लेकिन पक्षियों की चहचहाहट आरंभ हो चुकी थी । मैंने दादी के पास जाकर पूछा, ''दादी कौन–सा गाना गा रही हो ।'' दादी बोली, ''इसे चक्की की ओवियाँ कहते हैं ।'' और दादी फिर गाने लगी ।

पीसन के बहाने चाकी पर बैठे जाऊँ
मैं उल्लसित मेरे राम के लिए ओवी गाऊँ
सुबह के पहर में वासुदेव के झुंड आएँ
पूछ–पूछ मेरे बाबा का घर ढुँढ़वाएँ
एक ही पोती मिलाती मेरे गले से गला
जनाबाई के साथ पीसे स्वयं विठ्ठल साँवला

सीमा पर खेत गाँव नाले पर उद्‌यान
माईं के बबुआ और मोट एक ही तान
माली की बगिया में कौन शौक से गाए
मेरा सखा पंढरीराया फूल पौधों को पानी पिलाए
पिसाई हो गई, सूप में रह गए गेहूँ के पाँच दाने
ईश्वर ने दिया भाइयों का वरदान
हम बहनें गाएँगी ओवी का गान

''ये ओवियाँ ये गाने कहाँ सीखे दादी ?''
''अरे बाबू ! ये तो अपनी संस्कृति के पारंपरिक लोकगीत हैं । मेरी माँ पीसते हुए, कूटते हुए गाती थी । मैंने उसी से सीखे हैं ।'' दादी ने कहा । ''दादी ! मुझे भी ये लोकगीत बहुत पसंद हैं ।''

हे चाकी के ईश्वर मैं पिसाई कर रही हूँ
इस तरह माँ के दूध को सार्थक कर रही हूँ
ओवी की पहली पंक्ति विठ्ठल को समर्पित
मुट्‌ठी–मुट्‌ठी मोती के दाने जनाबाई को अर्पित ।

◆ लोकगीत प्रस्तुत करने का अवसर दें । ओवी के संबंध में अधिक जानकारी दें । अन्य आंचलिक भाषाओं की विविध ओवियाँ सुर ताल में बोलवा लें । ◆ लोकगीतों का संग्रह करवाइए ।

स्वरालंकार

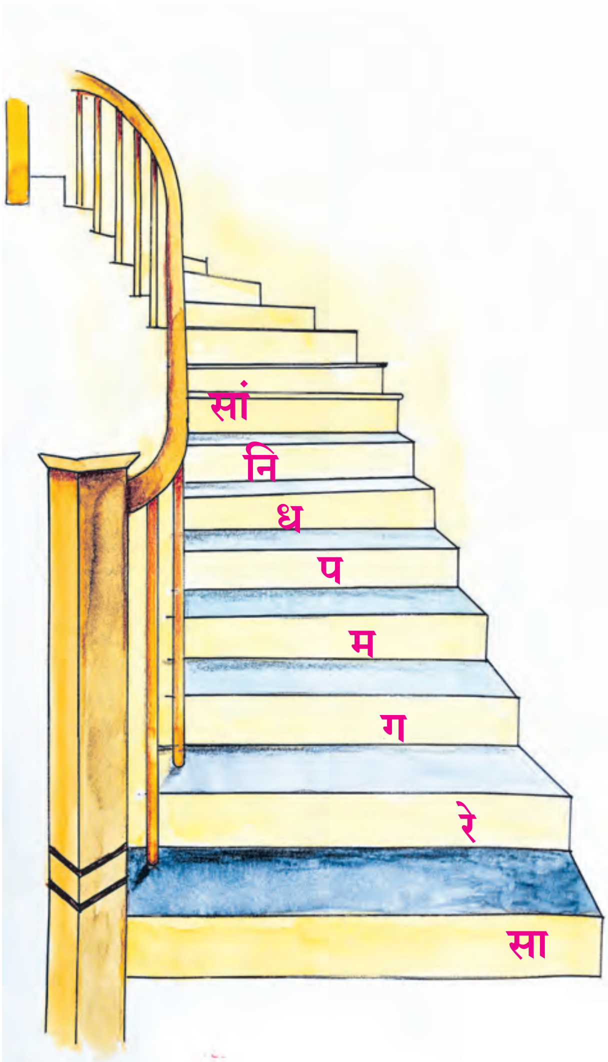

सा रे ग म प ध नि संगीत के ये सात स्वर तो हमें पता ही हैं ।

सा रे ग म प ध नि स्वरों के इस प्रकार चढ़ते क्रम को 'आरोह' कहते हैं ।

तो सां नि ध प म ग रे इस तरह स्वरों के उतरते क्रम को 'अवरोह' कहते हैं ।

(१)

सारेग रेगम गमप मपध पधनि धनिसां

सांनिध निधप धपम पमग मगरे गरेसा

(२)

सारेगम रेगमप गमपध मपधनि पधनिसां

सांनिधप निधपम धपमग पमगरे मगरेसा

(३)

सारेसारेग रेगरेगम गमगमप मपमपध

पधपधनि धनिधनिसां

सांनिसांनिध निधनिधप धपधपम पमपमग

मगमगरे गरेगरेसा

ताल रचना

हाथ से ताली देना

१-२-३-४, १-२-३-४

इस प्रकार हाथ से ताली दें और इसी के साथ उपलब्ध वाद्य अथवा वस्तु पर ताल दें ।

◆ स्वरालंकार सुर ताल में बोलवा लें । १-२-३-४ के अनुसार हाथ से ताली देकर उपलब्ध वाद्य अथवा वस्तु पर ताल देने की प्रत्यक्ष कृति करवाएँ । पिछले वर्ष सीखी तालियों का अभ्यास करवा लें । प्रत्यक्ष कृति करवा लें ।